BA - I   Date 18/07/20   Page-1

Paper - I

Unite - 3

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID: - rajgopal7755@gmail.com.

Chavarka : Epistomology (Lecture-II)

चार्वाक : ज्ञानमीमांसा (व्याख्यान - II)

कल के व्याख्यान में चार्वाक ज्ञानमीमांसा के अन्तर्गत प्रत्यक्ष प्रमाण के बारे में चर्चा किया था। चार्वाक ज्ञानमीमांसा की दृष्टिकोण से केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है। इसके अलावा अन्य सभी प्रमाणों का खंडन करता है। यह केवल प्रत्यक्ष की महत्ता को बताता है। इसी के अन्तर्गत चार्वाक अनुमान और शब्द जैसे मुख्य प्रमाणों का खंडन किया है। आज के व्याख्यान में चार्वाक द्वारा शब्द प्रमाण की खंडन की चर्चा की जायेगी।

चार्वाक शब्द प्रमाण को अप्रमाणिक मानता है :⇒

भारतीय दर्शन के अधिकांश सम्प्रदायों ने शब्द प्रमाण को वास्तविक ज्ञान का साधन मानते हैं। विश्वसनीय व्यक्ति या आप्त पुरुषों के वचनों एवं श्रुतियों (वेद, पुराण, गीता आदि) से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे शब्द प्रमाण कहते हैं। चार्वाक दर्शन शब्द प्रमाण को अवैध मानता है। आप्त पुरुषों के शब्दों से जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है, उसे वह कर्णेन्द्रिय प्रत्यक्ष ही मानता है, स्वतंत्र प्रमाण नहीं। पुनः आप्त पुरुषों का वचन वहाँ तक प्रमाणिक माना जा

सकता है जिसे प्रत्यक्ष द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। अगर ऐसे अप्रत्यक्ष विषयों का बोध कराया जाता है तो वह संदिग्ध है। क्योंकि इन विषयों का प्रामाण्य प्रत्यक्ष द्वारा सिद्ध नहीं है। आप्त पुरुषों द्वारा अदृष्ट पदार्थों या विषयों का वर्णन कल्पनामात्र है। शब्द प्रमाण के विरुद्ध चार्वाक दर्शन की निम्नलिखित आपत्तियाँ हैं।

(i) शब्द द्वारा ज्ञान तभी प्राप्त होता है, जब कोई विश्वास-योग्य व्यक्ति उपलब्ध हो। इसके लिए आप्त पुरुष की आवश्यकता है। अगर कोई व्यक्ति आप्त पुरुष मील भी जाये तो भी हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते हैं कि अमुक व्यक्ति आप्त पुरुष है। तथा शब्द कब विश्वास-योग्य है। इसके लिए भी हम अनुमान पर ही आश्रित होते हैं।

सभी आप्त पुरुष का वाक्य प्रमाण (सत्य) है।
यह आप्त पुरुष का वाक्य है।
∴ अतः यह सत्य है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि चार्वाक के अनुसार शब्द द्वारा प्राप्त ज्ञान अनुमान पर आधारित है। हम किसी शब्द को प्रामाण्य इसलिए मानते हैं कि वह विश्वास-योग्य होता है। अतः शब्द से प्राप्त ज्ञान अनुमान पर आश्रित है, अनुमान स्वयं संदिग्ध है। अतः शब्द की प्रामाणिकता संदिग्ध है।

(ii) शब्द से प्राप्त ज्ञान पूर्णतः सत्य नहीं होता है। कभी यह सत्य होता है तो कभी यह असत्य होता है।

Scanned with CamScanner

अतः सत्य ज्ञान देना शब्द का स्वाभाविक धर्म नहीं है। शब्द द्वारा सत्य ज्ञान प्राप्त करना महज एक संयोग है।

(iii) शब्द को ज्ञान का स्वतंत्र साधन मानना मूर्खता है क्योंकि शब्द प्रत्यक्ष पर आधारित होता है। शब्द द्वारा ज्ञान हमें किसी विश्वासयोग्य व्यक्ति से सुनने से अथवा किसी प्रामाणिक ग्रन्थ के अध्ययन से प्राप्त होता है। यह दोनों ही प्रक्रिया क्रमशः कर्णेन्द्रिय प्रत्यक्ष एवं चाक्षुष प्रत्यक्ष से होता है। अतः यह ज्ञान का स्वतंत्र साधन नहीं है।

(iv) शब्द प्रमाण का मूल स्रोत श्रुतियाँ हैं। श्रुतियों (वेद, गीता, उपनिषद) को सभी आस्तिक दर्शन स्वीकार करते हैं। चार्वाक वेद विरोधी दर्शन होने के कारण वेद, उपनिषद आदि की घोर निन्दा करता है। ये इनके विरुद्ध निम्न आपत्तियाँ व्यक्त किया है।

(a) वेद में ऐसे बहुत से वाक्य हैं जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता है। वेद में विरोधी बातों भरा पड़ा है। इसमें कहा गया है कि "पत्थर जल में तैरते हैं"। वेद में कुछ ऐसे शब्द हैं जो व्यर्थ व्याघातक अस्पष्ट तथा असंगत है। अतः यह विश्वासयोग्य नहीं है।

(b) चार्वाक वेद को धूर्त पुरोहितों की कृति मानती है। जिन्होंने अज्ञानी तथा विश्वासपरायण लोगों को धोखे में डालकर अपनी जीविका का प्रबंध किया है। चार्वाक ने स्पष्ट शब्दों में वेद निर्माता को भाण्ड, निशाचर और धूर्त कहा है। जब निर्माता ही धूर्त है तो वेद की प्रामाणिकता निरर्थक है।

(c) वैदिक कर्मकाण्ड को चार्वाक ने कल्पना पर आधारित माना है। वेद में यज्ञ की कुछ विधियाँ काफी अश्लील तथा काल्पनिक है। वेद में एक स्थान पर जिन विधियों की सराहना की गयी है, दूसरे स्थान पर उन्हीं विधियों का खंडन किया गया है। पुजारियों को पुरस्कार पर काफी बल दिया गया है, इससे यह प्रमाणित है वेद के रचयिता बहुत ही स्वार्थी और धूर्त थे। वेद को ईश्वर की रचना कहना भ्रामक है क्योंकि चार्वाक ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करता है। वेद में अपार स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, आत्मा-परमात्मा, यज्ञ आदि अतीन्द्रिय विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। इस ज्ञान को हम प्रत्यक्ष द्वारा प्रमाणित नहीं कर सकते है अतः वेद प्रमाण नहीं हो सकता है।

निष्कर्ष :- चार्वाक के ज्ञानमीमांसा के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः यह कह सकते है कि चार्वाक केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी प्रमाणों अनुमान, शब्द आदि का खंडन किया है। इस खंडन के मूल में प्रत्यक्ष की महत्ता को बढ़ाना है। प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण मानने से भारतीय चिन्तन परंपरा जो मोक्ष की साधना है, को भौतिक साधना से भी जोड़ दिया। केवल प्रत्यक्ष प्रमाण से विश्व में किसी प्रकार की व्यवस्था का दावा नहीं कर सकते हैं। यह विश्व का सीमित, अधुरा ज्ञान दे सकता है संपूर्ण का नहीं। इस प्रकार से चार्वाक केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानकर सभी प्रकार के नियम, विधान, नीति आदि का खंडन कर केवल भौतिक सुख पर बल दिया है।

Scanned with CamScanner